PAGE NO. :
DATE : / /

जर्मन चिंतन

'कला प्रकृति की नकल है' यह बात अधिकतर दार्शनिको ने अपनाई है लेकिन जर्मन चिंतको ने प्रकृति को ज्यादा ही महत्व देते हुए कहा है कि प्रकृति कला की आत्मा है।

ऐसे ही विचार जर्मनी के aestheticians ने रखे जिनमे प्रमुख है

Kant, Hegal, Baumgarten, Humboldt Schiller, Schopehauer and Goethe. Winckelmann.

Lessings : (1729 - 1781)

प्रथम जर्मन दार्शनिक विंकिलमन था जिसने कला-इतिहास पर प्रथम ग्रंथ की रचना की थी। यह महान युग-प्रवर्तक रचना थी। इसमे एक परिच्छेद है जिसका शीर्षक है "कला के तत्व" जिसमे विंकिलमन ने सौन्दर्य के स्वरूप की चर्चायें की है। उसके मतानुसार रंग, रूप मे सहायक अवश्य हो सकता है किन्तु उसका आधार नहीं होता। आगे वह कहते है कि सौन्दर्य उससे भिन्न होता है जो केवल आनन्द या मनोरंजन प्रदान करता है।

उदाहरण - एक व्यक्ति बिना सुन्दर हुए भी हमे खुश कर सकता है

बिंकिलमन के समान ही लेसिंग ने भी सौन्दर्य के प्रति ऐन्द्रीय दृष्टिकोण अपनाया है। वास्तव मे 18 वी शती मे 'कला प्रकृति

का अनुकरण है" की प्रतिध्वनि अरिस्टाटिल के प्राचीन सिद्धांत के अनुगमन में सारे योरप में गूँजती रही। लेसिंग और विंकिलमन की रचनाओं में उनके युग की यह प्रतिध्वनि सुनाई देती है। लेसिंग ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'लाओकून" में विवेचन करते हुए लिखा है कि "कला का प्रथम और अन्तिम लक्ष्य केवल सौन्दर्य को प्रतिबिम्बित करना होता है। इस प्रसंग में उन्होंने ग्रीक कलाकारों की उक्ति दी जो सौन्दर्य के अतिरिक्त कुछ भी चित्रित नहीं करते थे। यह कलाकार इस माने में आदर्शवादी अवश्य थे कि यदि वास्तविक वस्तु बदसूरत होती थी तो वे उसका चित्र न उतारते थे। लेसिंग ने साफ लिखा है" आपका चित्र कौन बनायेगा जब आपकी ओर कोई देखेगा नहीं"। आगे वह कहते है कि मूर्ति और शिल्प एवं चित्र का क्षेत्र सीमित है किन्तु काव्य असीम है।

वैसे भी वह मानते है कि काव्य और चित्रकला में भेद होता है। चित्रकला आकार, रंग और प्रतीकों के माध्यम को लेती है। इसके द्वारा कलाकार कोई एक क्षण ही प्रकट कर सकता है। उस क्षण में क्रिया भी प्रकट हो सकती है। लेसिंग के अनुसार कलाकार सन्तुलन, सामजस्य अनुपात और अलंकार से सौन्दर्य की वृद्धि कर सकता है। सौन्दर्य ही कला का लक्ष्य

है। वह कहते हैं कि उपयोगिता और आवश्यकता से सौन्दर्य का कोई सम्बन्ध नहीं है। सौन्दर्य ही कला का लक्ष्य है। लेसिंग ने कला में माध्यम पर अधिक बल दिया है उन्होंने 1755 में प्रसिद्ध नाटक "मिस सारा सिम्पसन" लिखा जो बहुत लोकप्रिय हुआ।

एक और नाटक जिसने उन्हें प्रसिद्धि दिलाई वह था 'लाओकून' (LAOCOON) लाओकून (असल में लाओकून एक प्रसिद्ध मूर्ति थी जो 50 ई०पू में रोम में बनाई गई, समय के साथ यह धरती में समा गयी। 16 शती में खुदाई से यह मूर्ति, फिर से खोजी गई, इससे पुरातत्व को आत्मा जाग्रत हो गई। लेसिंग ने इसी मूर्ति को नाम पर एक नाटक भी लिखा। यह प्राचीन कथा पर आधारित एक दुखान्त नाटक था जिसे बहुत ख्याति प्राप्त हुई।